अध्याय 40

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 1 शमूएल 9,19,12,14

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (1 शमूएल 9,19,12,14)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[शिष्यता]* दानिय्येल : लूका 9:23

क-ध्यान करना

लूका 9:22-27 **पढ़ें।**

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

दानिय्येल लूका 9:23
यदि कोई मेरे पोछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। लूका 9:23

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1. शिष्यों के प्रभु ने स्वयं कष्टों को सहना, मरना और फिर मुर्दों में से जी उठना था।

यह पहली बार था जब प्रभु यीशु मसीह ने पहली बार अपने कष्टों, मृत्यु व फिर से जी उठने के बारे में भविष्यवाणी की। यीशु के समय में बहुत से यहूदी इस बात की अपेक्षा कर रहे थे कि उनका मसीह आकर उनके शत्रुओं को जीत लेगा और वह सदा काल के लिए जीवित रहेगा। इस कारण वे लोग इस खबर को सुनकर हैरान रह गये।

लेकिन उसकी मृत्यु के बारे में तो भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले ही बता दिया गया था, वह तो पुराने नियम में चढ़ाई जाने वाली कुर्बानी का प्रतीक था जिसके लिए स्वयं यीशु तैयार थे। यूहन्ना 10:11 में उसने कहा,"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान को देता है।" यीशु को वह करना जरूरी था जो वह करने के उद्देश्य से आया था। उसकी मृत्यु आवश्यक थी(लूका 14:44; प्रेरितों 4:12)। यही एक मात्र रास्ता था जिसके द्वारा पाप के द्वारा उत्पन्न परमेश्वर पिता के धर्मी क्रोध को शान्त कराया व हमारे पापों के जुर्माना चुकाया जा सकता था।

ध्यान दें कि जिन लोगों ने असल में इस्राएल की धार्मिक धरोहर की सुरक्षा करनी थी उन्होंने ही अपने उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ा दिया। इस्राएल के पुरनिए सिन्हेद्रिन के मुख्य सदस्य थे और यरूशलेम के कुलीन परिवारों से आये हुए लोग थे। महायाजक, महायाजकों के परिवार से थे, जिसमें उस समय का महायाजक भी शामिल था। व्यवस्था के शिक्षक पुराने नियम की शिक्षा व दीक्षा प्राप्त किये हुए लोग थे। उनका काम व्यवस्था का अध्ययन करना,अनुवाद करना, व्यवस्था की शिक्षा देना व नकल करना व व्यवस्था को बताता था।

2. एक चेले को अपने आप का इनकार करना है (लूका 9:23)।

यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए। "पीछ हो लेना" शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति द्वारा अपने आप को यीशु मसीह का शिष्य होने के लिए दे देना है। सैंकड़ों लोग हैं जो यीशु के पीछे हो लिए,जहां कहीं वह गया वह उसके पीछे चल दिये, उसकी बातें सुनी और उसके चमत्कारों को देखा। लेकिन यहां पर यीशु उसका सच्चा चेला होने की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं।

अपने आप का इनकार करना। एक सच्चे चेले ने सबसे पहले अपने आप का इनकार करना चाहिए। जब पतरस ने यीशु का इनकार किया, उसने कहा,"मैं तो इस व्यक्ति को जानता तक नहीं"। इनकार करने का मतलब था, कि वह उसको न पहिचानने का निर्णय ले रहा है, निर्णय ले रहा है कि अब वह उसके साथ सम्बन्ध नहीं रखेगा। इसी प्रकार यहां पर इनकार करने का अर्थ है कि व्यक्ति सदा काल के लिए अपने पुराने स्वभाव को न कह रहा है, वह "स्वयं" जो परमेश्वर के अनुग्रह से दूर था, वह स्वयं "जिसने अभी तक नया जन्म नहीं पाया है", वह स्वयं जो "आत्म केन्द्रित" है। जब आप अपने आपे अर्थात स्वयं का इनकार करते हैं, तो आप उन सारी बातों का इनकार करते हैं जिन पर आप स्वाभाविक तौर पर निर्भर थे। आप अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति,योग्यता,सम्पत्ति और अपने पद पर भरोसा करने से इनकार करते हैं। बल्कि,आप अपने आपे से इनकार करके अपने जीवन व अपने उद्धार के लिए केवल परमेश्वर पर भरोसा करते हो। अत: इनकार करने का अर्थ उन सभी बातों से निर्भरता या भरोसा हटाना है जिन पर आप अपने उद्धार व जीवन के लिए पूरी तरह से निर्भर, आधारित, टिके,जुड़े हुए हैं। इनकार का अर्थ हर एक पापमय वस्तु, तथा परमेश्वर का विरोध करने वाली या परमेश्वर के हटकर स्वावलम्बो दिखाने की कोशिश करती है। इनकार करने के उदाहरणों को हम 2 कुरिन्थियों 8'9, मत्ती 4:19-22, मत्ती 9:9 और फिलिप्पियों 3:7-8 में देखते हैं।

3. एक चेले को अपनी क्रूस उठानी चाहिए(लूका 9:23)।

एक क्रूस उठाने हुए व्यक्ति की तस्वीर आम तौर पर एक दोषी व्यक्ति को दर्शाती है जिससे जबरजस्ती उसकी क्रूस को नियम स्थान तक उठाने के लिए कहा जाता जहां पर बाद में उसे मृत्यु दण्ड दे दिया जाता है। फिर भी यहां पर थोड़ा फरक है। जिस काम को एक अपराधी से जबरजस्ती करने के लिए कहा जाता है उसी काम को एक चेला स्वेच्छा से करता है। वह स्वेच्छा से सताव,कष्ट, तिरस्कार और लज्जा को मसीह के प्रति वफादार होने तथा मसीह के कारण सहता है। हर एक चेले के पास उठाने के लिए भिन्न क्रूस है।

क्रूस उठाने के विभिन्न उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- प्रेरितों के काम 5 में, प्रेरितां को लोगों में सुसमाचार प्रचार करने के कारण गिरफ्तार करके, जेल में डाल दिया गया और कोड़े लगाये गये। उनका क्रूस अत्याचार व कैद में जाना थी।
- प्रेरितों 7 में, स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार दिया गया, क्योंकि उसने अपने लोगों को जिद्दी और कठोर हृदय क लाग कहा, जिन्होंने कभी पवित्र आत्मा की बात नहीं मानी और जिन्होंने स्वयं अपने मसीह की हत्या कर दी(प्रेरितों 7:51-52)। उसके लिए शहीद होना उसकी क्रूस थी।
- 2 कुरिन्थियों 11:23-28 में, प्रेरित पौलुस अपनी क्रूस का संक्षेप में वर्णन करता है।"मैं बार बार कैद में गया, मैं कोड़े खाने में ;बार बार मृत्यु के जोखिम में। पाँच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बेतें खाई, एक बार मुझ पर पत्थराव किया गया, एक राज दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में,नदियों के जोखिमों में, नगरों में अन्यजातयों से जोखिमों में, डाकुओं के जोखिमों में, अपने जातिवालों के जोखिमों में नगरों के जोखिमों में, जंगल के जोखिमों में,समुद्र के जोखिमों में और झूठे भाईयों के बीच जोखिमों में रहा। परिश्रम और कष्ट में; बार बार उपवास करने में, जाड़े में,उघाड़े रहने में; और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता मुझे प्रतिदिन दबाती है। उसकी क्रूस कठिन परिश्रम व बहुत से जोखिमों से होकर गुजरना थी।
- प्रकाशितवाक्य 1:9 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरित यूहन्ना को, उसके वचन प्रचार करने व शिक्षाओं के कारण तथा यीशु मसीह की गवाही के कारण, पतमुस नामक टापू पर निर्वासित करन दिया गया था। उसका क्रूस निर्वासन था।

4. चेले को यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए (9:23)।

चेला यीशु के पद चिन्हों पर चलना शुरू करता है और उसका अनुसरण करता ही चला जाता है। "अनुसरण" करने का अर्थ निम्नलिखित है:

- बाइबल में अनुसरण करने का अर्थ यीशु मसीह पर विश्वास करना है। यूहन्ना 6:66-69 में हम पढ़ते हैं, कि चेलों ने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर का पवित्र व अभिषिक्त जन है इस कारण उन्होंने यीशु का अनुसरण करना नहीं छोड़ा और न ही अपने विश्वास से पीछे हटे, जैसा की बहुत से दूसरे लोगों ने किया था।
- अनुसरण करने का अर्थ यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चलना है। 1 पतरस 2:21 में हम पढ़ते हैं,"और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो।

- अनुसरण करने का अर्थ यीशु की आज्ञा मानना है।
- अनुसरण करने का अर्थ यीशु की सेवा करना है। यूहन्ना 12:26 में हम पढ़ते हैं,"जो कोई मेरी सेवा करना चाहता है वह मेरे पीछे हो ले, और जहाँ मैं रहूँगा वहा मेरा दास भी रहेगा।"
- इन वचनों के अनुसार, यीशु मसीह चाहते हैं कि उसके चेले प्रतिदिन उसका अनुसरण करें। अपने आपे का इनकार करना, क्रूस को उठाकर यीशु का अनुसरण करना सच्चे मन परिवर्तन और पवित्रिकरण को प्रगट करने का एक और तरीका है। ये परमेश्वर के वरदान होने के साथ साथ मनुष्य की ज़िम्मेदारी हैं।

5. एक चेले को यीशु मसीह के खातिर अपने प्राण देना चाहिए (लूका 9:24-25)।

लूका 9:24-25 में लिखा है "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा,परन्तु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे या उसकी हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?

यहाँ पर 'प्राण' शब्द का अर्थ "उसके जीवन खाने से है"। पद 24 के पहले आधे भाग में 'प्राण' का अर्थ अभौतिक या व्यक्ति के जीवन का वह अदृश्य भाग है जो परमेश्वर के अनुग्रह से दूर, बिना नया जन्म पाया हुआ जीवन है। यदि कोई व्यक्ति अपने प्राण अर्थात अपने जीवन, वजूद या जीवन, अर्थात यदि वह अपने पापमय जीवन,अपनो प्रतिष्ठा, सम्मत्ति,पद, प्रसिद्धि, अपने लिए जीवन जीने की इच्छा को नहीं छोड़ना चाहता है तो, वह अपने प्राण या जीवन को खो देगा। परमेश्वर ने जो कुछ योजना उसके जीवन में बनायी होगी वह कम होती चली जाएगी और उसका अन्त नरक में विनाश हो जाएगा। उदाहरण के लिए लूका 12:16-12 में देखें, वह धनी अपने आप से कहने लगा,"तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति है,चैन से खा पी और सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किसका होगा? ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं"।

यहाँ पर 'प्राण' शब्द का अर्थ "उसके जीवन बचाने से है"। 24 पद के दूसरे आधे भाग में, 'प्राण' का अर्थ अभौतिक या व्यक्ति के जीवन का वह अदृश्य भाग है जो परमेश्वर के अनुग्रह से प्रभावित हुआ व नया जन्म पाया हुआ जीवन है। जब कोई व्यक्ति मसीह व मसीह की सेवा के लिए अपना प्राण, वजूद या जीवन खोता है जिसका अर्थ अपने जीवन को पूरी तरह से मसीह के लिए समर्पित करना व इस संसार में मसीह की सेवा करना है, वह अपने जीवन व प्राण को बचाता है। उसका अन्त:करण व बाहरी जीवन अधिकाई से शान्ति, निश्चय, आनन्द और खास तौर पर रिश्तों में प्रेम व जीवन में उद्देश्य को अनुभव करेगा। यीशु अपने अनुयायियों से अनुरोध करता है कि वे भीतर स बदलकर स्वार्थी जीवन न व्यतीत करें, परन्तु बाहरी तौर से बदलकर उसके लिए व उसके राज्य के लिए जीवन व्यतीत करें। उदाहरण के लिए:

मत्ती 10:37-39 में यीशु ने " अपने माता पिता को या अपने बेटे या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है" के सन्दर्भ में कहते हुए कहा कि वह "अपने प्राण को खोता है"।

मत्ती 16:21-25 में यीशु ने "मसीह के साथ जुड़े होने तथा मसीह की शिक्षाओं को बताने के सन्दर्भ में" "अपने प्राण को खोता है" शब्दों को इस्तेमाल किया।

यूहन्ना 12:24-26 में यीशु ने 'मसीह में नि:स्वार्थ सेवा के सन्दर्भ में' "अपने प्राण को खोता है" शब्दों का इस्तेमाल किया।

लूका 17:30-33 में यीशु ने 'यीशु मसीह के साथ उसके दूसरे आगमन के समय जाने के सन्दर्भ में' "अपने प्राण को खोता है" शब्दों का इस्तेमाल किया।

यीशु मसीह हमारी सम्पूर्ण भक्ति, उसके साथ हमारे रिश्ते, मसीह को सेवा करते हुए हमारे जीवन की सारी परिस्थितियों पर और हमारे भविष्य कालीन जीवन पर पूरा अधिकार करना चाहता। यदि कोई व्यक्ति संसार की सारी भौतिक धन दौलत, आराम, प्रतिष्ठा, को प्राप्त कर ले और इस प्रक्रिया को पूरा करने में यदि वह उस जीवन से वंचित रह जाए जो परमेश्वर उन्हें प्रदान करना चाहता था, तो उसे कुछ भी प्राप्त नहीं वरन वह सब कुछ खो चुका है।

6.एक चेले को हिम्मत के साथ यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को स्वीकार कर लेना चाहिए (लूका 9:26)।

लूका 9:26 में लिखा है,"जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी, जब अपनी और अपने पिता की और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा सहित आएगा,तो उससे लजाएगा। मसीह व उसके वचनों से लज्जाने का मतलब, इतना भयभीत या घमण्डी होना है, कि आप उससे या उसके कामों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। जो लोग केवल अपने लिए जीते या फिर मसीह को नज़रअन्दाज़ या उसका विरोध करते हैं उनका कभी उद्धार नहीं हो सकता। लूका 13:24-25 में यीशु ने कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो,क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेगें और न कर सकेंगे। जब

घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो,और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो,"हे प्रभु, हमारे लिए खोल दे" और वह उत्तर दे,'मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहाँ के हो?

7. परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते हुए देखना (लूका 9:27)।

लूका 9:27 में लिखा है,'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े है। उनमें से कुछ ऐसे है। कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।" यह कैसे सम्भव है कि यीशु मसीह के कुछ चेले परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आते हुए देखेगें(मरकुस 9:1)? लूका 9:26-27 एक साथ जुड़े हैं। वे धरती पर उसके कामों की शुरूआत व अन्त को प्रगट करते हें। पद 26 में, यीशु मसीह उसके दूसरे आगमन के बारे में बोलते हैं, अर्थात वह कब हज़ारों स्वर्गदूतों के साथ बादलों पर प्रगट होगें। उस समय पर वह इस जगत में जीवन व्यतीत कर चुके प्रत्येक व्यक्ति का न्याय करेगा। उसने न्याय करने का आधार यह होगा कि उस व्यक्ति ने धरती पर उसे स्वीकार किया था कि नहीं और उन्होंने उसका अनुसरण किया कि नहीं।

पद 27 में, यीशु मसीह धरती पर उसके राज्य की शुरूआत के बारे में बोलते हैं, अर्थात उसके पुनरूत्थान,उठाये जाने और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने, पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने और प्रथम शताब्दी में तेज़ी के साथ बहुत से राष्ट्रों में प्रभु के सुसमाचार के सुनाये जाने के बारे में बोलते हैं। परमेश्वर की सामर्थ्य से मृतकों में से जी उठाने के बाद यीशु, वह जगत की सारी शक्ति से परे,परमेश्वर के दाहिने हाथ पर जा बैठा। उसने अपने चेलों पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेला और उन्हें उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थ्य प्रदान की(इफिसियों 1:19-21; प्रेरितों 1:8)। उसके सैंकड़ों अनुयायियों ने अपने जीवन काल में इस बात की गवाही दी(1कुरिन्थियों 15:6)।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***

2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** दानिय्येल : लूका 9:23

3) ***पुनः अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट)	*[संसार में जीवन बिताना]*
		संसार में परीक्षाएं: मत्ती 4:1-11

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए मत्ती 4:1-11 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये हम मिलकर मत्ती 4:1-11 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें **निरीक्षण**

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

4:4

खोज 1. भाव : लिखा है।

यीशु ने बाइबल के हवालों का इस्तेमाल करते समय इस भाव का इस्तेमाल किया। मत्ती के पुस्तक में यीशु मसीह ने पुराने नियम के व्यवस्थाविवरण 6 और 8 से तीन बार वचनों का हवाला दिया। यीशु बाइबल को अत्यधिक महत्व दिया करते थे। यीशु ने बाइबल को हमेशा जीवन के सत्य को मुख्य पहिचान तथा सिद्धान्त और किसी भी मुद्दे पर अन्तिम निर्णय के तौर पर देखा। उसने लोगों को शिक्षा देने व उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने प्रचार तथा लोगों को चेतावनी देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने लोगों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया। उसने शैतान के प्रलोभनों के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए बाइबल का इस्तेमाल किया।

4:11

खोज 2. शैतान यीशु को छोड़कर चला गया।

बहुत से समयों पर शैतान मसीहियों को प्रलोभन देता है। जैसा कि यहां पर है,वह मसीहियों को लेकर गिराने के लिए, उन्हें असफल करने व पराजित करने के लिए, एक के बाद एक प्रलोभनों की झड़ी लगा सकता है। लेकिन यीशु मसीह ने साबित किया कि हम शैतान के सारे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा परमेश्वर शैतान को हमें हमेशा परीक्षा में डालने की अनुमति भी प्रदान नहीं करते। प्रलोभनों व परीक्षाओं के साथ लड़ाई के बाद शैतान अपने आप चला जाएगा। लेकिन हम मसीहियों को हमेशा सर्तक रहना चाहिए, क्योंकि वह पुनः गिराने का प्रयास ज़रूर करेगा।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम मत्ती 4:1-11 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने क द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

4:1

प्रश्न 1. शैतान कौन है?

ध्यान दें। शैतान एक गिराया गया स्वर्गदूत है। उसने परमेश्वर व परमेश्वर के उद्धार की योजना का विरोध किया था। दुष्टात्माओं को एक सेना और उसके प्रभाव में आये अविश्वासियों की सहायता से वह, सुसमाचार प्रचार में बाधा डालने का प्रयास करता है, वह लोगों को ऐसे पापों को करने के लिए उसकाता है जिससे परमेश्वर को दु:ख हो तथा वह अविश्वासियों के मनों पर अपनी इच्छाओं को पूरा करवाने के लिए कब्ज़ा कर लेता है(2तीमुथियुस 2:26)। वह विश्वासियों को विकट प्रतिद्वन्दी है और हम उसका सामना केवल परमेश्वर की सामर्थ से ही कर सकते हैं। वह अपनी योजना के तहत पहले तो लोगों को पाप करने के लिए प्रलोभन देता है। और जब वे पाप में पड़ जाते है। तो वह बाद में परमेश्वर के सामने आकर उन पर दोष लगाता है(प्रकाशितवाक्य 12:10)। इसके अलावा शैतान झूठा वरन झूठ का पिता है(यूहन्ना 8:44)।

प्रश्न 2, परीक्षाएं या प्रलोभन क्या है और उन्हें इन परीक्षाओं के लिए उकसा सकता है?

ध्यान दें। परीक्षा कोई भी ऐसा कार्य है जो हम से पाप करवाना चाहता है। एक 'पाप' का अर्थ परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य है बहक जाना है। एक परीक्षा हमें हमेशा हमारे जीवन में पराजित करना चाहती ह। हम निम्नलिखित क्षेत्रों में परीक्षा का सामना करते हैं:

हमारा अपना पापमय स्वभाव भी हमें परीक्षा में खींच सकता है। याकूब 1:13-15 में हमे पढ़ते हैं कि 'जब किसी की परीक्षा हो तो कोई यह न कहे कि, " मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है" क्योंकि न तों बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।"

बुरा संसार हमें प्रलोभन या पाप की ओर खींच सकता है। बुरे संसार में बहुत तरह के प्रलोभन हैं। 1 यूहन्ना 2:15-17 में प्रेरित यूहन्ना कहता है कि इन प्रलोभनों का सन्दर्भ उन बातों से हैं जिन्हें हम देखते हैं, अपने मन में उनकी अभिलाषा करते हैं और फिर उस काम को करते हैं। लोगों की आंखें उन पापमय अभिलाषाओं से भरी हुई है जिनके लिए मना किया गया है।

उनके मन बुरे काम करने का लालायित रहते हैं। और अन्त में उनका शरीर वही काम करता है जो गलत हैं। बुरे व अनर्थ काम करने के बाद वे उन बुरे कामों के कारण घमण्ड भी करते हैं। उन्हें अपने गलत कामों पर बढ़ा गर्व भी होता है। उन्हें अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाने में बढ़ा गर्व महसूस करते हैं। उन्हें लोगों को मारकर बढ़ा सुकून मिलता है। उन्हें अपने अधिकारियों का सामना करके बहुत अच्छा महसूस होता है। प्रेरित यूहन्ना कहता है कि इस प्रकार का संसार व उसमें बुरे काम करने वाले लोग निश्चय की मिटते चले जाते हैं।

शैतान हमें परीक्षाओं में डाल सकता है। शैतान एक दहाड़ने वाले सिंह के समान है जो हमेशा हमारी ताक में लगा रहता है(1 पतरस 4:8; इफिसियों)। उसकी कोशिश रहती है कि वह लोगों को पाप करने के लिए अर्थात परमेश्वर की योजना के खिलाफ काम करने के लिए उकसाए।

4:2

प्रश्न 3.यीशु ने चालीस दिन व रात का उपवास किया। क्या मसीहियों को आज भी उपवास करना चाहिए?

ध्यान दें।

मत्ती 6:5-18 में उपवास और प्रार्थना। पुराने नियम में बतायी गयी विधियों में से उपवास भी एक भाग था। यीशु मसीह के प्रथम आगमन के समय उपवास को रद्द कर दिया गया था(मरकुस 2:18-22; इफिसियों 2:14-15)। लेकिन प्रथम शताब्दी के अन्तिम भाग में अर्थात ई.प. में फिर से उपसाव को धार्मिक परिपेक्ष में तपस्या तरीके के रूप में देखा जाने लगा। लेकिन मत्ती 17:21 व मत्ती 6:13 का पिछला भाग मत्ती के लेख का मूल भाग नहीं था।यीशु मसीह ने मसीहियों को प्रार्थना करना सिखाया। उन्होंने न तो उन पर उपवार करने के लिए ज़ोर दिया और न ही उन्होंने ऐसा करने से मना किया। यदि मसीही जन उपवास करना चाहते हैं तो उन्हें बहुतायत से बिना कपट क ऐसा करना चाहिए(मत्ती 6:16-18)।

मत्ती 9:14-15 में उपवास। यीशु की अनुपस्थिति में उपवास होगा। मत्ती 9:15 में यीशु ने उन कहा "क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है,शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।" यीशु दूल्हा है और सारे मसीही मिलकर दुल्हन हैं। यूहन्ना 16:16-22 में मसीह ने सिखाया कि मसीही लोग विलाप व उपवास करेगें जब दुल्हा उनसे दूर कर दिया जाएगा "कुछ समय के बाद"। वह "थोड़ी देर के बाद" सर्वप्रथम तो वे तीन दिन थे जिसमें वह कब्र में रहा और फिर वे उसके स्वर्ग में उठा लिये जाने व पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच के दस दिन थे। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद उनका आनन्द उनके पास वापस आ गया और अब वह आनन्द उनसे कोई वापस नहीं ले सकता। पवित्र आत्मा में और उसके द्वारा यीशु मसीह जगत के अन्त तक हमारे साथ है(मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:16-17)।

मत्ती 9:16-17 में उपवास। इसके बाद मसीह लोगों को आगे शिक्षा देते हुए बताने लगा कि लोग नया दाखरस पुरानी मश्कों में नहीं डालते। यदि वे ऐसा करते हैं ता मश्कें फट जाएंगी, और दाखरस बह जाती है तथा मश्कें नाश हो जाती हैं। वे नई दाखरस को नई मश्कों में डालते हैं जिससे दोनों ही सुरक्षित बनी रहती हैं।

पुराने नियम में लोगों को उनके पश्चाताप के लिए केवल वर्ष में एक ही बार अपने आप को इनकार करने की जरूरत थी और वह दिन प्रायश्चित का दिन था(लैव्यव्वस्था 16:26-32)(1407 ई.पू)। यशायाह भविष्यद्वक्ता(740-680 ई.पू) में बहुत ही स्पष्टता से सिखाता है कि 'अपने आपके का इनकार करना' खाने पीने से दूर रहने से भिन्न है! जिस प्रकार के उपवास के बारे में (अपने आपे का इनकार करने) परमेश्वर ने हमें शिक्षा दी वह अन्याय की जंजीरों को तोड़ना या किसी के जीवन के जुए को तोड़ना है,बन्धुए को आज़ाद करना और किसी बन्धन में जकड़े हुए को स्वतन्त्र करना है। उस उपवास का अर्थ अपना भोजन किसी भूखे के साथ साझा करना, किसी बेघर को छत पाने में मदद करना,नंगे को कपड़े दिलवाना और अपने जरूरत मन्द परिवार जनों से नजर न चुराना है (1 तीमुथीयुस 5:4,8)। इसका मतलब दूसरों पर दोष लगाने या बुराई से बचना, भूखों के लिए खड़े होना और कुचले हुओं की जरूरतों को पूरा करना है(यशायाह 58:6-12)!

लेकिन, निर्वासन के बाद(538 ई.पू) यहूदियों ने 'अपने आपे का इनकार करने को" "उपवास" का नाम दे दिया और उसे व्यवस्था अर्थात धार्मिक रीति रिवाजों में एक बना दिया। निर्वासन के पश्चात उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं को नजरअन्दाज़ करते हुए जो वास्तव में 'अपने आप का इनकार करने' पर आधारित शिक्षाएं थी, लगातार चौथे, पांचवे, सातवें, और दसवें महीने में उपवास किये(जर्कयाह 7:5-10; 8:19)। यीशु के समय में फरीसी लोग सप्ताह में दो बार उपवास किया करते थे(लूका 18:12)।

'पुरानी दाखरस' विलाप का प्रतीक है, जो निर्वासन के बाद यहूदियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गयी है और 'पुरानी मश्क' यहूदियों के पुराने समय के उपवास व उसकी विधियों को दर्शाती है। 'नई दाखरस' उद्धार व आशीष को प्रगट करती है, जो मसीह हमें प्रदान करता है और नयी 'मश्कें' मसीहीयों द्वारा आनन्दमयी नयी आराधना को दर्शाता है(यूहन्ना 4:23-24;इफिसियों 5:18-20)। उद्धार का आनन्द, उपवास के विलाप के साथ मिलकर नहीं चलता है। उद्धार का आनन्द नये तरीके से परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने व उसकी सेवा करने में प्राप्त होता है। उपवास के पुराने तरीके में आनन्द का कोई स्थान नहीं था। यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान ने व्यवस्था की सारी मांगों को पूरा (मत्ती 5:17)व उसकी विधियों को रद्द (कुलुस्सियों 2:14) कर दिया है। उपवास अब धार्मिकता के लिए कोई जरूरी मांग नहीं है और न हीं उस पुनः जरूरी मांग बनने देना है! मसीही लोग अगर चाहें तो उपवास कर सकते हैं, मगर उनके लिए उपवास करना कोई मज़बूरी नहीं है।

4:2-4

प्रश्न 4. शैतान के द्वारा की गयी यीशु मसीह की प्रथम परीक्षा क्या थी?

ध्यान दें। चालीस दिनों के उपवास के पश्चात यीशु मसीह को भूख लगी।शैतान ने यीशु मसीह के सामने यह चुनौति रखी कि वह मरूस्थलों को रोटी में बदल दे। अगर वह पत्थरों को रोटी में बदल सकता है तो वह अपनी भूख मिटा सकता है। पहली परीक्षा के दौरान, शैतान ने *परमेश्वर पर यीशु के भरोसे को तोड़ने का प्रयास किया*। उनसे यीशु मसीह के भरोसे को नाश करने की कोशिश की कि परमेश्वर उसकी शारीरिक व भौतिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। उसने यीशु को उकसाने की कोशिश की कि वह मामले को अपने हाथों में ले ले और स्वावलम्बी बनकर कार्य करें। लेकिन यीशु ने परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करके परीक्षा पर विजय पायी। यदि परमेश्वर अपने शब्दों से आकाश के तारों को और सम्पूर्ण धरती को बना सकता है इसलिए यीशु ने यह विश्वास किया कि वही परमेश्वर अपने वचनों के द्वारा निश्चय ही उसकी दैनिक जरूरतों को भी पूरा कर सकता है।

4:4

प्रश्न 5. "परमेश्वर के मुख से निकले प्रत्येक वचन से" का क्या मतलब है?

ध्यान दें।

'परमेश्वर के मुख से निकला हुआ प्रत्येक वचन" परमेश्वर का बोला हुआ शक्तिशाली वचन है, जिसके द्वारा उसने सारे जगत की रचना की(इब्रानियों 11:3)और उसी वचन के द्वारा वह उसे आज तक सम्भाले हुए है(इब्रानियों 1:2-3)। उसके मुख के बोले गये वचनों के द्वारा ही परमेश्वर ने मरूस्थल में इस्राएलियों के लिए भोजन की व्यवस्था व उनकी देखभाल की। उसी के बोले गये वचनों द्वारा परमेश्वर भौतिक परिस्थितियों व वातावरण के द्वारा चालीस दिन तक उपवास में रहे यीशु की भी ज़रूरतों की पूर्ति करेगा। जबकि शैतान का मानना था कि मनुष्य को जीवित रहने के लिए साधारण रोटी अति आवश्यक है, यीशु ने दावा किया कि रोटी नहीं, परन्तु मनुष्य की जीवन व उसकी खुशहाली के लिए परमेश्वर का बोला गया शक्तिशाली वचना ज़रूरी है।

4:5-7

प्रश्न 6. शैतान ने किस तरह यीशु की दूसरी बार परीक्षा की?

शैतान यीशु को मन्दिर के कंगूरे पर ले गया और उससे अपने आप को वहां से नीचे गिरा कर यह देखने के लिए कहा कि क्या यह सच नहीं कि परमेश्वर ने कहा है कि उसके स्वर्गदूत उसे हाथों हाथ उठा लेगें। दूसरी परीक्षा में शैतान ने यीशु को परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने के लिए उकसाया। यह परीक्षा उसके आध्यात्मिक क्षेत्र में थी और वह यीशु से कुछ सनसनीखेज काम करवाना चाहता था। शैतान, यीशु से एक मूर्खतापूर्ण कार्य को करवाने के द्वारा एक अच्छी बात को साबित करवाना चाहता था। वह चाहता था कि यीशु अपने को उस इमारत से नीचे गिराकर साबित करें कि उसका परमश्वर उसे बचा लेगा। वह यीशु को परमेश्वर पर गलत बातों के लिए काम करने हेतू बहकाना चाहता था। वह यीशु को उन बातों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए उकसाना चाहता था जिसके लिए परमेश्वर ने उससे कभी कोई वायदा नहीं किया था। वह अपनी कल्पनाओं को विश्वास का और बेशर्मी के घमण्ड को परमेश्वर की अधीनता के विकल्प के रूप में रखने के लिए यीशु की परीक्षा कर रहा था। वह यीशु के द्वारा परमेश्वर को लेकर एक प्रयोग या परीक्षण करना चाहता था कि क्या वास्ताव में परमेश्वर, परमेश्वर है। उसने यीशु को यह समझाने की कोशिश की कि इस इमारत से कूद कर वह सच में साबित कर सकता है कि परमेश्वर सच्चा है, और वह बाइबल में कही हर बात को पूरा करने वाला है। लेकिन, परमेश्वर ने उस पर भरोसा करने वाले लोगों की सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा की है। परमेश्वर ने मूर्खता पूर्ण कार्यों द्वारा परमेश्वर की परीक्षा करने वाले

लोगों की सुरक्षा करने की कोई प्रतिज्ञा नहीं की है। शैतान ने अपने द्वारा ठहराये क्षेत्र में परमेश्वर को परखने के लिए उकसाने के द्वारा यीशु की परीक्षा की। यीशु ने बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करते हुए इस परीक्षा पर भी विजय प्राप्त की, जहां पर लिखा है कि,'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'।

परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने के लिए उदाहरण निम्नलिखित हैं। यदि मैं परमेश्वर से मेरी बिमारी को चंगा करने के लिए प्रार्थना करता हूँ, लेकिन उसी के साथ साथ अपने जीवन में बुरी आदतों को भी बनाये रखता हूँ, तो मैं परमेश्वर पर झूठा विश्वास करता हूँ। यदि मेरे पास कोई अश्लील या उपद्रवों से भरी वीडियो है, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि 'हे प्रभु मेरी दृष्टि को तू इन बुरी बातों से दूर रख'(भजन 19:37) तो मैं परमेश्वर पर झूठा भरोसा रख रहा हूँ। यीशु मसीह कहते हैं कि अपने जीवन की उन परिस्थियों में परमेश्वर की सहायता मांग कर जिसमें हम उस पर झूठा विश्वास करते हैं, उसकी परीक्षा नहीं करें।

4:6

प्रश्न 7. क्या यीशु मसीह को शैतान द्वारा इस्तेमाल किये गये बाइबल के वचनों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था?

ध्यान दें। शैतान ने यीशु मसीह को भजन 91:11-12 से हवाला दिया। जिसमें भजनकार परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के स्वर्गदूतों के कामों के फायदे के बारे में बताता है (इब्रानियों 1:14; उदा. उत्पत्ति 28:12)। उदाहरण के लिए, एक स्वर्गदूत विश्वासियों की अगुवाई करता है(उत्पत्ति 24:7) स्वर्गदूत विश्वासियों की सुरक्षा करते हैं(2 राजा 6:16-17;भजन 34:7)।लेकिन शैतान ने यीशु को बहकाने के लिए बाइबल का गलत इस्तेमाल किया। उसने यीशु की परीक्षा करने के लिए भजन संहिता 91:11-12 को तोड़ मरोड़कर एक पेश किया कि, यीशु परखकर देखे ता सही कि वह उसे बचाएगा भी कि नहीं। यूहन्ना 8:44 में, यीशु ने कहा, यीशु झूठा वरन झूठ का पिता है। शैतान कभी सत्य नहीं बोलता! जबकि बाइबल के वचन सत्य हैं, लेकिन परमेश्वर का शत्रु उसकी बातों को लेकर घुमा सकता है।

परमेश्वर के वचन को उसकी मूल मनसा या अर्थ मं होकर समझा जाना बहुत जरूरी है। इसलिए यह जरूरी है कि बाइबल के अनुच्छेदों को ऐतिहासिक सन्दर्भो, ग्रीक व इब्रानी भाषा के शब्दों के मूल अर्थ के आधार पर समझा जाए। जब इन नियमों को नज़रअन्दाज या अस्वीकार किया जाता है तो उसका परिणाम बाइबल का गलत अर्थ निकलना होता है। और शैतान वास्तव में यही चाहता है। और संसार में बहुत से झूठे शिक्षकों का मकसद भी यही है। वे बाइबल पर विश्वास करने का दावा करते हैं,लेकिन लोगों को गुमराह करने के लिए वे अपने ही विचारों को लोगों पर थोप देते हैं।

यीशु शैतान की मनसा को जानते थे। वह जानते थे कि शैतान बाइबल के वचन का गलत मतलब निकाल रहा है। यीशु ने बाइबल के एक वचन का सही मायना बताते हुए शैतान का सामना किया। यीशु ने कहां कि किसी को परमेश्वर की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।

4:8-9

प्रश्न. क्या यह सत्य है कि सारा संसार शैतान के कब्ज़े में है?

ध्यान दें।

शैतान के झूठे दावे। शैतान इस बात पर गर्व करता है कि धरती का सारा अधिकार उसके हाथ में है, क्योंकि वह लोगों को बताता है कि धरती का सारा राज्य उसके हाथों में दिया गया है(लूका 4:5-7)। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि शैतान एक झूठा और दिखावा करने वाला है(यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 11:14)! वह लोगों को यह विश्वास दिलाना पसन्द करता है कि संसार उसके कब्ज़े में है। फिर,भी उसका गर्व करना और दावा करना दोनों झूठे हैं।

शब्द 'संसार'(यूनानी: कोसमोस) का इस्तेमाल बाइबल में अलग अलग मतलब से किया गया है। शब्द का सही मतलब उसके सन्दर्भ से पता चलता है।

- एक संगठित सृष्टि के रूप में(यूहन्ना 1:10; 17:5,24), धरती (यूहन्ना 21:25)
- मानव इतिहास की एक रंगशाला के रूप में संसार, धरती के लोग, मानवजाति(यूहन्ना 1:9; 3:19; 9:39; 11:27;12:46; 14:31; 16:21,28; 17:18; 18:36-37; 1 यूहन्ना 4:1,3;4:9)
- सामान्य लोगों के रूप में संसार(यूहन्ना 7:4; 14:22)
- पतित मानवजाति का संसार: परमेश्वर से पृथक, पाप से दबा हुआ, परमेश्वर धर्मी न्याय के अधीन व उद्धार का जरूरतमन्द।(यूहन्ना 3:19)

- बिना किसी पृष्ठभूमि का संसार। यूहन्ना 3:19 के अनुसार पतित मानवजाति वाला लेकिन अतिरिक्त विचारों वाला संसार:ऐसे लोग जिनकी कोई जाति,राष्ट्रीयता या भाषा नहीं ह (यूहन्ना 1:29; 3:16.3:17; 6:33,51; 8:12; 9:5;11:52; 12:32; 1 यूहन्ना 2:2; 4:14-15)(तुलनात्मक 4:42)। यह संसार को दुष्ट का अधिकार क्षेत्र, पूरी तरह से ईश्वर,मसीह या मसीही विरोधी नहीं दर्शाता(यूहन्ना 15:18; 1 यूहन्ना 5:19)। परमेश्वर बुराई को पसन्द नहीं करता हैं, इसलिए उसे वे लोग भी पसन्द नहीं है जो लगातार बुराई करते व परमेश्वर से लगातार बैर रखते ह(रोमियों 1:18;भजन 5:4-6; भजन 11:5;याकूब 4:4)। न हीं यह जगत में पैदा हुए सारे लोगों के बारे में बोलता है।
- बुरा संसार। यूहन्ना 3:19 के अनुसार पतित मानवजाति वाला लेकिन अतिरिक्त विचारों वाला संसार: बुराई करने वाले लोग जो पूरी तरह से परमेश्वर, मसीह और मसीहीयों के विरूद्ध है(यूहन्ना 7:7, 8:23;12:31;14:17,30,31;115:18;17:9, 14-16,25; 1 यूहन्ना 2:15-17; 3:1,13; 4:4-5; 5:4,5,19)। केवल यह संसार ही शैतान के अधिकार में है(1 यूहन्ना 5:19)। लेकिन शैतान सच्चे मसीहियों को नुकसान नहीं पहुँचा सकता (1यूहन्ना 5:18)।

चुने हुए लोगों का संसार। संसार भर से परमेश्वर के सभी चुने हुए लोग। यीशु मसीह केवल उनका उद्धारकर्ता है(यूहन्ना 4: 42; 1 यूहन्ना 4:14)। यीशु मसीह केवल उनके ही पापों के लिए प्रायश्चित करता है(1 यूहन्ना 2:2)।

केवल बुराई का संसार ही शैतान के नियन्त्रण में है। जब प्रेरित यूहन्ना कहता है कि सारा संसार उस दुष्ट के नियन्त्रण में है(1 यूहन्ना 5:19),तो उसका मतलब यह नहीं है कि सारे राष्ट्र व उनके सभी लोग शैतान के नियन्त्रण में हैं। 1 यूहन्ना 5:19 में संसार का अर्थ सारी पृथ्वी या उसमें रहने वाले सारे मसीही लोग हैं, वरन केवल पापमय संसार, अविश्वासियों का संसार,ऐसा संसार जिसमें लोग पाप के गुलाम बने रहते हैं, ऐसी सरकार से बना हुआ संसार जो यीशु मसीह के विरूद्ध है, जो बुरे लोगों और शैतान की दुष्टात्माओं की सेना से भरा है। शैतान नया जन्म पाए विश्वासियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता (1 यूहन्ना 5:18)। अत: शैतान संसार के केवल बुरे लोगों पर नियन्त्रण रखता है, परन्तु वह केवल इसलिए ऐसा करता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति दी है(अय्यूब 1:12; 1 कुरिन्थियों 5:5)। शैतान मसीहियों पर अग्निमय तीरों (परीक्षाओं) को छोड़ सकता है (इफिसियों 6:16),लेकिन वह कभी मसीही जन पर कब्ज़ा नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 4:4) और उसका मसीहीयों पर घटित होने वाली किसी भी घटना पर कोई नियन्त्रण नहीं है (रोमियों 8:28)।

सम्पूर्ण संसार यीशु मसीह के हाथों में है।

- पुराने नियम के समय में। पुराने नियम में भी संसार पर अधिकार करने वाले सर्वश्रेष्ठ नियम परमेश्वर के हाथों में थे न की शैतान के (भजन 2; भजन 9:7; 29:10; 93:1-2; 145:13; 146:10; यिर्मयाह 32:17,27)। उदाहरण के लिए, एक ही रात में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने दुष्ट शत्रु की सेना को खत्म कर दिया (यशायाह 37:36-37)।
- धरती पर यीशु मसीह के जीवन काल में। यीशु मसीह जब इस संसार में जीवन व्यतीत कर रहे थे तो वह पहले ही जानते थे कि परमेश्वर ने सभी चीज़ों उसके हाथ में कर रखा था(यूहन्ना 13:3)। यीशु मसीह ने कभी किसी पवित्र युद्ध में हिस्सा नहीं लिया और वह हर एक पवित्र युद्ध के विरूद्ध बोलते हुए कहता है कि जितने लोग तलवार उठाते हैं वे तलवार के द्वारा ही मारे जाएंगे(मत्ती 26:52)। यीशु मसीह को अपने पिता परमेश्वर को बुलाने का अधिकार था और वह उसके लिए स्वर्गदूतों की बारह टुकड़ियां तक भेज सकता था। लेकिन यीशु ने बुरे लोगों को नाश करने के लिए उसकी शक्ति का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया: क्योंकि उसे उस से भी बढ़कर काम करना था: अर्थात उसे व्यवस्था व धर्मशास्त्र में लिखी भविष्यद्वक्ताओं की वाणी को पूरा करना था(मत्ती 26:53-54; व 5:17)। इसके अलावा, कोई भी बुरा व्यक्ति मसीह व मसीहियों पर किसी भी प्रकार अधिकार तब तक नहीं चला सकता जब तक कि उसकी स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से अनुमति न दी जाए(यूहन्ना 19:11)।
- यीशु मसीह की मृत्यु। जब यीशु मसीह मरे, तो शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया जहां पर अब वह क्रोधित होकर विश्वासियों पर दोष लगाता है(अय्यूब 1:6; प्रकाशितवाक्य 12:7-12)और उससे धरती पर से भी अधिकार छीनकर निकाल दिया गया जहां पर वह संसार के सारे राज्यों व राष्ट्रों से परमेश्वर के संदेश को अलग रखने की कोशिश करता था (दानिय्येल 10:13-14; मत्ती 12:28-30;24:14;यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।
- यीशु मसीह का पुनरूत्थान। यीशु मसीह के पुनरूत्थान होने के बाद से, पृथ्वी और स्वर्ग का सारा अधिकार यीशु मसीह का है(मत्ती 28:18)। यीशु के पुनरूत्थान हो जाने के बाद,शैतान, उसकी सारी बुरी शक्तियां और धरती पर उसकी सत्ता तथा सारे अच्छे स्वर्गदूत भी उसकी अधीनता में हैं(इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 5:8-14)। पुनरूत्थान होने के बाद यीशु ने सारे संसार के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया(यूहन्ना 12:32), उसने उन्हें शैतान

के शिकजें से छड़ाकर अपने राज्य में प्रवेश करवाया(कुलुस्सियों 1:13)। यीशु मसीह ने संसार की सारी बुराईयों पर जय पायी है और सारा संसार हमेशा तक यीशु मसीह की आधीनता में ही बना रहता है (सुनिश्चित काल)(यूहन्ना 16:33)। यीशु मसीह अब राजाओं को राजा और प्रभुओं का पभु है (प्रकाशितवाक्य 1:5,8;3:26-27; 5:8-14; 6:2; 12:10-12; 17:14; 19:16; 22:13)। यीशु मसीह के साथ में हर देश से मसीही लोग मसीह के पास एकत्र हो रहे हैं(मत्ती 12:30; तीमुथीयुस 2:25-26)।

4:8-10

प्रश्न 9. शैतान के द्वारा यीशु की तीसरी परीक्षा क्या थी?

ध्यान दें। शैतान ने यीशु का उकसाया कि वह परमेश्वर को नज़रअन्दाज़ करके शैतान का चुनाव कर ले। उसने यीशु की इस संसार के वैभव के क्षेत्र में परीक्षा की। हो सकता है कि दर्शन के द्वारा शैतान ने यीशु को संसार के राज्य का वैभव दिखाया। उसके बाद उनसे यीशु मसीह स यह वायदा किया कि अगर वह झुककर उसे दण्डवत करे तो वह उसे संसार के राज्य का सारा वैभव दे देगा।

तीसरी परीक्षा में, शैतान ने यीशु को उकसाया कि वह परमेश्वर पर भरोसा न करके शैतान पर भरोसा करे। शैतान चाहता था कि यीशु मसीह बिना क्रूस का दु:ख उठाये छोटा रास्ता लेकर सारे जगत का मुकुट प्राप्त कर ले(भजन 2:6-8; इब्रानियों 1:1-5; 5:5)। लेकिन शैतान तो झूठा है(यूहन्ना 8:44)लेकिन वह मुखौटा लगाकर लोगों के सामने यह प्रगट करना चाहता है कि वह ज्योति का दूत है (2 कुरिन्थियों 11:14)। शैतान के पास निश्चय ही जगत के राज्य पर कोई अधिकार नहीं है(भजन 145:13; 146:10)! अत: वह किसी को वह चीज़ नहीं दे सकता जो चीज़ उसके पास है ही नहीं! एक बार फिर से यीशु ने वचन का हवाला देकर शैतान पर विजय प्राप्त की, जो वचन यह कहता है कि केवल परमेश्वर की हमारी आराधना और सेवा के योग्य परमेश्वर है।

आज भी हम लोगो को मन्दिर में जाते और मूर्तियों के साथ मोल-भाव करते हुए देखते हैं: उदाहरण के लिए, यदि भगवान मेरी इस मनोकामना को पूरा कर दे तो मैं भगवान के लिए यह करूँगा। और हम देखते हैं के 'गुरू महाराज' लोग लोगों के साथ झूठे वायदे करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि वह व्यक्ति एक आतंकवादी बन कर अपने शत्रुओं को उड़ा दे तो, उसे सीधा जन्नत नसीब होगी। केवल झूठे नबी या भविष्यद्वक्ता ही इस प्रकार का वायदा कर सकते हैं। हम ऐसे बहुत से लोगों को देखते हैं जो समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में लिखे विज्ञापनों पर विश्वास करते हैं। शैतान चाहता है लोग उस परमेश्वर को छोड़कर जिसने अपने आप को बाइबल में जाहिर किया है बाकि सारी बातों पर विश्वास कर लें। असल में शैतान की अभिलाषा यह है कि लोग परमेश्वर की बजाय उसकी आराधना करें। यीशु कहते हैं कि लोगों को केवल उस परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है।

प्रश्न 10. क्या मसीही लोग परीक्षाओं पर विजय पा सकते हैं?

ध्यान दें। 1 कुरिन्थियों 10:13 में हम पढ़ते हैं, "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।"

परमेश्वर मसीहियों के सहने की शक्ति से बढ़कर परीक्षाओं को न भेजकर मसीहियों के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा परमेश्वर हर एक मसीही के लिए परीक्षाओं में से निकास का रास्ता भी खोलता है! इसलिए अगर मसीही चाहें तो उन्हें परीक्षाओं पर विजय मिल सकती है!

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम मत्ती 4:1-11 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से

इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. मत्ती 4:1-11 में से सम्भावित इस्तेमाल की जाने वालो व्यवहारिक बातों के उदाहरण ।

4:1 याद रखें कि परमेश्वर कभी कभी मसीहियों को ऐसी परिस्थियतियों में ले जाता है जहां वह पाप करने की जिज्ञासा को महसूस करने लगते हैं। परमेश्वर उसकी बुराई करने में परीक्षा करता है(याकूब 1:13)वरन यह नहीं चाहता कि वह पाप में गिर पड़े। परन्तु परमेश्वर उसको परखना चाहता (याकूब 1:12) और उसे परमेश्वर पर भरोसा करना तथा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा करना सिखाना चाहता है कि वह परमेश्वर उसके लिए निकास का रास्ता निकालेगा (1 कुरिन्थियों 10:13)। परीक्षाओं में विजय प्राप्त करने से चरित्र (धीरज व सहनशक्ति)(याकूब 1:2-4)का निर्माण होता है और जिसके द्वारा परीक्षा करने वाले अर्थात शैतान के सामने भी परमेश्वर को महिमा मिलती है (अय्यूब 1:21-22);मत्ती 4:10)।

4:2 याद रखें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है हम नहीं। यद्यति यीशु ने मरूस्थल में 40 दिनों को उपवास रखा, बाइबल में कहीं पर भी इस बात पर ज़ोर नहीं दिया गया कि मसीहियों का उपवास करना चाहिए। यदि आप किसी समय अन्तराल के लिए उपवास करना चाहते हैं, तो आप गुप्त में उपवास करें।

4:3 यह कभी न भूलें कि शैतान खास तौर पर मसीहियों की परीक्षा करता है, क्योंकि वे लोग अब उसके नियन्त्रण में नहीं हैं(कलुस्सियों 1:13; याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8-9)

4:4 रोटी खाकर, लेकिन परमेश्वर के मुख से निकले हर एक वचन को भी खाकर भी जीवित रहें। एक चीनी मसीही ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया,"बाइबल नहीं, तो सुबह का नाश्ता नहीं"। सुबह वह भोजन करने से पहले बाइबल पढ़ा करता था।

4:5 शैतान आपके अपनी मण्डली के साथ भी पाप करने के लिए उकसाएगा। उसे बिल्कुल अवसर प्रदान न करें।

4:6 याद रखें कि शैतान आपसे अपनी इच्छा को पूरा कराने के लिए बाइबल का शोषण करेगा या उसके वचनों को तोड़ मरोड़कर सामने रखने का प्रयास करेगा। प्रतिदिन बाइबल का अध्ययन करें तथा बाइबल के उस अर्थ को समझना सीखें जिस अर्थ के साथ उसे लिखा गया था! तब आप शैतान के झूठों को आसानी से पहिचान पाएंगे।

4:7 जब शैतान आपकी परीक्षा करता है तो उससे कहें "यीशु मसीह के नाम से मेरे सामने से दूर हो जा!" या उसके लि बाइबल में लिखित वचनों में से उपयुक्त वचन लेकर उसका सामना करें। उदाहरण के तौर पर आप कहें, लिखा है कि,"अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर"।

4:8 याद रखें कि शैतान आपको परखने के लिए किसी स्थान में ले जाना चाहता है! परीक्षाओं या पाप के उन स्थानों से बचें।

4:9-10 याद रखें कि शैतान की सारी परीक्षाओं को केवल एक ही मकसद है: कि आप जीवते परमेश्वर की आराधना छोड़कर शैतान की उपासना करने लगें। उसके बुरे मकसद को पहिचाने और इस अवसर को परमेश्वर के लिए साक्षी देने के अवसर में बदल दें और कहें कि आप केवल जीवते परमेश्वर की सेवा व आराधना करते हैं।

4:11 याद रखें कि आपकी नियमित तौर पर परीक्षा नहीं होगी। लेकिन याद रखें कि शैतान आप पर आक्रमण करने लिए बार बार घात जरूर लगाएगा(लूका 4:13)।

2. मत्ती 4:1-11 में इस्तेमाल की जानी वाली व्यवहारिक बातें।

जब कभी मेरे सामने कोई परीक्षा आती है मैं बाइबल पढ़ना शुरू कर देता हूँ। मैं शैतान की परीक्षाओं व प्रलोभनों का परमेश्वर के वचन से जवाब देना सीखना चाहता हूँ। इसलिए, मैं प्रतिदिन बाइबल को पढ़ूंगा, ताकि मैं बाइबल को बेहतर ढंग से जान जाऊँ, ताकि जब भी कभी मेरे सामने कोई परीक्षा लाए तो मैं उसको जवाब दे सकूं।

अब मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि जब शैतान मुझे गलत कामों को करने के लिए उकसाना चाहता है तो, उसका असली मकसद परमेश्वर और मेरे बीच के सम्बन्ध को नाश करना होता है। उसकी परीक्षाओं के पीछे मकसद यह है कि मैं परमेश्वर पर विश्वास करना छोड़ दूँ, या मैं परमेश्वर पर झूठा विश्वास करूँ या परमेश्वर पर विश्वास करने की बजाय मैं शैतान पर विश्वास करने लगूँ। इसलिए मुझे प्रयत्नशील बनकर उसका सामना करना है, वह केवल मेरा ही शत्रु नहीं वरन परमेश्वर का भी शत्रु है।

कदम 5. प्रार्थना — प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें मत्ती 4:1-11 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मत्ती 4:1-11 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: 2 शमूएम 15,17,18 व 22 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। दानिय्येल: लूका 9:23 प्रभुता: रोमियों 12:1-2। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें आर देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।